चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	25-11-22	5	1-4

किसान कीटों से बचाव कर बढ़ा सकते है सरसों की फसल की पैदावार

कम खर्च में अधिक लाभ देती है सरसों की फसल, नवंबर व दिसंबर में देखभाल जरूरी

भास्कर न्यूज | हिसार

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। एचएयू कुलपति प्रोफेसर बी आर कांबोज ने बताया कि हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसानों को सरसों की अधिक उपज लेने के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है। नवंबर और दिसंबर माह में सरसों की फसल की देखभाल जरूरी होती है। सरसों में विभिन्न कीटों को आक्रमण हो जाता है। इसलिए किसानों को इन फसलों की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पड़ती है। किसान सरसों के कीटों को पहचान कर उनका नियंत्रण कर सकते है।

फसल की मौसम के अनुसार करें बिजाई

सरसों की फसल का फाइल फोटो।

- **चित्तकबरा कीट या धोलिया:** यह सरसों का मुख्य कीट है। जिसके शिशु व प्रौढ़ पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। इसके शिशु व प्रौढ़ अण्डाकार होते हैं। जिनके उदर पर काले भूरे धब्बे होते हैं। यह पौधों के विभिन्न भागों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं।
- **सरसों की आरा मक्खी :** यह हाइमेनोप्टरा वर्ग का एकमात्र हानिकारक कीट है, जो फसल को नुकसान पहुंचाता है। कीट की गहरे रंग की सूंडी पत्तियों में छेद कर तथा नई प्ररोह को काटकर हानि पहुंचाती है। इसकी सूण्डी दिन के समय छिपी रहती है।
- **सरसों का माहू/चेपा/अल :** कीट के शिशु व प्रौढ़ समूह में रहकर पौधों पर आक्रमण करते हैं। जिससे फलियां व तना चिपचपा हो जाता है। फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं और अगर दाने बनते भी हैं तो कमजोर बनते हैं।

ऐसे करें रोकथाम

इनकी रोकथाम के लिए किसान सरसों फसल की बिजाई अधिक देरी से न करें और आक्रमण होने पर कीटग्रस्त टहनियों को नष्ट कर दें। कीट के आक्रमण से बचाव को 250 से 400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

- **सुरंग बनाने वाली सूण्डी :** इस कीट की सूंडियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे पदार्थ को खाती हैं। पत्ता सूर्य की तरफ करने पर कीट साफ दिखाई देता है। उत्पादन पर भी असर पड़ता है।
- **बालों वाली सूंडियां :** सूंडियों का आक्रमण अक्टूबर से नवंबर में अधिक होता है। आरंभ में सूंडियां फसल की पत्तियों को खा जाती हैं। बड़े होने पर अकेले सारे खेत में फैल जाती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	25.11.22	1	1-6

भास्कर खास • मछली पालकों को दी जाएगी फ्री ट्रेनिंग, छात्र कर सकेंगे रिसर्च, बायोफ्लॉक लैब तैयार, बाकी मार्च तक बनेंगी

एचएयू में बनेगी वेट लैब, आरएएस व बॉयोफ्लॉक लैब, ₹1.86 करोड़ मंजूर

महबूब अली | हिसार

मछली पालन करने वाले किसानों और फिशरीज साइंस की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए खुशखबरी है। एचएयू में जल्द वेट लैब, बायोफ्लोक और आरएएस संरचना बनाई जाएगी।

वेट लैब के लिए 35.22 लाख, आरएएस के लिए 138 लाख तथा बायोफ्लॉक 3.35 लाख का बजट मंजूर किया गया है। बायोफ्लाक बन के तैयार हो चुका है, बाकी मार्च माह तक बनकर तैयार हो जाएंगे। एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि तीनों लैब मछली पालन करने वाले किसानों से लेकर छात्रों के लिए मुफीद साबित होगी। लैब में निःशुल्क प्रदेश के किसानों को मछली पालन के बारे में जानकारी दी जाएगी। बताया जाएगा कि कम पानी में कैसे मछली पालन किया जाए। छात्रों को ग्लास एक्वेरियम में मछली को लेकर रिसर्च करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लैब में मछली पर सफल रिसर्च हो सकेगी।

एचएयू में तैयार कराई जा रही आरएएस यूनिट।

फिशरीज कॉलेज ऑफ साइंस के डीन डॉ. नीरज कुमार और विभागाध्यक्ष डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि एचएयू में वेट लैब का निर्माण कार्य शुरू करा दिया गया है। एमएससी और पीएचडी के छात्र यहां पर रिसर्च कर सकेंगे। अभी तक छात्र यहां ग्लास एक्वेरियम में रिसर्च करते थे, जिसमें जगह कई बार कम पड़ जाती थी, जिसके कारण मछली की ग्रोथ भी अधिक नहीं हो पाती थी। लैब में टैंक और संसाधन होने के कारण छात्र सही ढंग से रिसर्च कर सकेंगे। किसानों को भी प्रयोगशाला में मछली पालन के बारे में जानकारी दी जा सकेगी।

जानें... क्या है आरएएस तकनीक

आरएएस वह तकनीक है, जिसमें पानी का बहाव निरंतर बनाए रखने लिए पानी के आने-जाने की व्यवस्था की ज़ाती है। इसमें कम पानी और कम जगह की जरूरत होती है। इस तकनीक में 70 से 90% पानी की बचत होती है, उसी पानी को शुद्ध करके दुबारा प्रयोग में लाया जाता है। सामान्य तौर पर एक एकड़ तालाब में 3500-4 हजार मछली का बीज डाला जाता है जबकि इस सिस्टम के जरिए एक हजार लीटर पानी में 100-110 मछली छोटे साइज की डालते हैं। ऐसी मछली छोड़ी जाती हैं जो तेजी से बढ़ती है। इसकी लागत कम करने एवं क्षमता बढ़ाने के लिए छात्र परमवीर सिंह ने डॉ. रचना गुलाटी की देखरेख में मॉडल बनाया है जिसके अच्छे परिणाम मिल रहे हैं।

पढ़ए... क्या है बायोफ्लॉक तकनीक

बायोफ्लॉक तकनीक बीते कुछ दिनों में मछली पालन का नया सिस्टम बनकर सामने आया है। इससे जहां पानी और चारे की कम खपत होती है तो मछली का उत्पादन अधिक होता है। बयोफ्लॉक सिस्टम से मछली पालन के लिए बड़े तालाब की जरूरत नहीं होती, बल्कि छोटे-छोटे टैंक बनाकर मछली का उत्पादन किया जा सकता है। इससे 70 प्रतिशत तक पानी बचाया जा सकता है। मछली को जितना दाना डाला जाता है, वह उतना नहीं खा पाती, जिसके कारण जो दाना मछली छोड़ती है, उसे बाहर निकालना पड़ता है। इसके लिए बैक्टीरिया कल्चर डालते हैं। जो वेस्ट दाने को मछली के लिए लाभदायक प्रोडेक्ट में बदल देते हैं। फीड की रिक्वायरमेंट में कमी आती है।

"मछली पालन वाले किसानों की आमदनी बढ़ाने की तरफ भी विवि प्रशासन प्रयासरत है। जिसके लिए विवि में लैब का निर्माण कराया जा रहा है। वहीं, किसानों को भी मछली पालन के संबंध में ट्रेनिंग दी जाएगी।"

-प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, एचएयू, हिसार।